राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा)

अनुवाद सम्बन्धी सावधानियां व निर्देश

1. प्रक्रिया के आधार पर होने वाले अनुवादों (शब्दानुवाद, यांत्रिक अनुवाद, सारानुवाद व भावानुवाद) में संस्थान (नीपा) के प्रकाशन, हिंदी क्षेत्र के एक व्यापक पाठक समुदाय तक अपनी पहुँच बनाने की प्रतिबद्धता के तहत, जटिल वाक्य विन्यासों, हिंदी में शब्दों के अभाव व अनुवाद के उपरांत मूल अर्थ उत्त्पन्न होने में जटिलता की स्थिति में, सारानुवाद व भावानुवाद को प्राथमिकता देगा.
2. **मूल पाण्डुलिपि के बड़े वाक्य-विन्यासों को छोटे वाक्यों में अनुदित करें, जिससे कथन का सार अनुवाद में खो जाने की अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूप से पाठक तक संप्रेषित हो सके.**
3. **अनुवाद का वाक्य विन्यास हिंदी का होना चाहिए. उदाहरण के लिए why I am not here का अनुवाद 'क्यों मैं यहाँ नहीं हूँ' के स्थान पर 'मैं यहाँ क्यों नहीं हूँ' हो. जिससे हिंदी पाठक समुदाय, हिंदी पढ़ते समय अंग्रेजी के वाक्य विन्यास से न उलझे.**
4. पारिभाषिक, तकनीकी व दार्शनिक शब्दावलियों के लिए यथासंभव 'वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग' के कोशों की सहायता लें व अनुवाद करते समय इन शब्दों के सम्मुख कोष्ठक में मूल शब्दों को यथावत रहने दें(जिससे संपादक सटीक शब्द सम्बन्धी निर्णय ले सकें)
5. शब्द या अवधारणाओं के अनुवाद में यह कतई आवश्यक नहीं है कि शास्त्रीय या मानक भाषाओँ से ही शब्द ग्रहण किये जांय. अनुवाद में देशज, बोलचाल की भाषाओं के शब्दों का सर्वथा स्वागत किया जायेगा.

6. शब्दाभाव की स्थिति में अंग्रेजी के मूल शब्द का हिंदी में लिप्यांतरित स्वरुप स्वीकार कर लिया जाएगा.
7. **मशीनी अनुवाद (अनुवाद संबंधी सॉफ्टवेयर या गूगल) की सहायता न ली जाय. वह किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जायेगा.**
8. अनुवाद का टंकण यूनिकोड फॉण्ट में ही करें व फॉण्ट की एकरूपता सुनिश्चित करें.
9. **अनुवाद के उपरांत उसे दो बार स्वयं 'अर्थ ग्रहण', प्रवाहमयता, हिंदी का वाक्य विन्यास व एक सामान्य पाठक की दृष्टि से अवश्य पढ़ें.**
10. सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची का अनुवाद नहीं, लिप्यान्तरण किया जायेगा.

नोट: *इन सम्पूर्ण दिशा-निर्देशों का आशय कहीं से आपकी अनुवाद रचनात्मकता को प्रभावित या उसे सीमाबद्ध कर नियंत्रित करने का नहीं है. आप बेहतर व संप्रेषणीय अनुवाद के लिए इससे इतर कल्पना एवं रचनात्मकता का परिचय दे सकते हैं.*